हैं ही नहीं । क्वेश्चन पूछने वाले नहीं आये हैं । चोटिंग कर गये और चले गये । चीटिंग का मतलब था, वोट कर गये ।

*142. *[The questioner (Shri Santosh Kumar Sahu) was absent. For answers* vide *col.* 39-40 *infra]*

ओलम्पिक के लिए तैयारी

*143. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या **मानव संसाधन विकास मंत्री** 6 मार्च, 1992 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 1455 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत द्वारा आगामी ओलम्पिक में किन-किन खेलों में भाग लिये जाने की सम्भावना है ; और

(ख) क्या उनके लिये कोई तैयारी की जा रही है ; यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है ?

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री अर्जुन सिंह) : (क) और (ख) विवरण सदन के पटल पर रख दिया है ।

विवरण

भारत बैडमिंटन, मुक्केबाजी, हाकी, टेनिस, टेबल टेनिस, निशानेबाजी, कुश्ती, तीरंदाजी, भारोत्तोलन, पाल-नौकायन, एथलेटिक्स तथा जूडो में 12 खेलों में भाग ले रहा है । तैयारी पूरे जोश से चल रही है । हाल ही के महीनों में सघन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा चुके हैं तथा संघों के अनुरोध पर खिलाड़ियों को भारत में अथवा विदेशों में प्रशिक्षण-व-प्रतियोगिता के अवसर प्रदान किये गये हैं ताकि वे खेलों में अपना प्रदर्शन बेहतर बना सकें । हाल ही के महीनों में टीमों को प्रदान किये गये प्रमुख प्रशिक्षण शिविरों और प्रमुख विदेशी प्रदर्शनों की सूची संलग्न है । इसके अतिरिक्त, जहां संघों द्वारा अनुरोध किया गया, टीमों को आवश्यक उपस्कर सहायता उपलब्ध कराई गई है ।

सूची

खेल विद्या का नाम	भारत में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों का विवरण	भारत/विदेशों में प्रदान किये गये प्रशिक्षण सह प्रतियोगिताएं
1	2	3
टेबल टेनिस	1-2-92 से 25-2-92 1-3-92 से 25-3-92 16-4-92 से 30-4-92 25-6-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक्स में प्रस्थान होने तक ।	27 फरवरी से 1 मार्च, 1992 तक निगाटा, सिटी, जापान में 25वें ओलम्पिक शिखर खेलों के टेबल टेनिस एशियाई क्वालिफाइंग टूर्नामेंट में भाग लेना ।
टेनिस	कोई प्रशिक्षण शिविर आयोजित नहीं किया गया । अर्हता प्राप्त खिलाड़ी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं चैम्पियनशिपों में भाग लेते रहे थे ।	1. ए०ई०सी० द्वारा 12 से 17 मई'92 में मनीला में आयोजित विश्व कप की एशिया क्षेत्र स्पर्धा में 3 सदस्यीय टीम का भाग लेना । 2. श्री लीयंडर पेस का भारत तथा विदेशों में प्रशिक्षण ।

1	2	3
मुक्केबाजी	13-1-92 से 7-2-92 15-3-92 से 27-4-92 12-5-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक्स में प्रस्थान होने तक ।	1. 26 फरवरी से 4 मार्च, 1992 तक बैंकाक में एशियाई मुक्केबाजी-व-ओलम्पिक चयन ट्रायल में मुक्केबाजी टीम का भाग लेना । 2. 27 अप्रैल से 3 मई, 92 तक मनीला में एशियाई मुक्केबाजी-व-222वीं ओलम्पिक क्वालिफाइंग प्रतियोगिताओं में मुक्केबाजी टीम का भाग लेना । 3. 15 मई से 10 जून, 1992 तक क्यूबा (हवाना) में पेड्र सटाओं तथा गिराल्डो कान्डोंव मुक्केबाजी प्रतियोगिताओं में मुक्केबाजी टीम का भाग लेना ।
हाकी	जनवरी से फरवरी 1992 मार्च से अप्रैल 1992 5-6-92 से 15-6-92 16-6-92 से बार्सिलोना प्रस्थान करते तक ।	यूरोपीय देशों अर्थात् ब्रुसेल्स, लंदन, मड्रीड, कोलोन तथा हालैंड में विभिन्न टेस्ट मैचों में हाकी टीम का भाग लेना ।
एथलेटिक्स	15-4-92 से 18-6-92 20-6-92 से 17-7-92 14-7-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक में प्रस्थान करने तक ।	21-3-92 को बोस्टन (अमरीका) में आई०ए०ए०एफ० विश्व क्रोस कंट्री चैम्पियनशिप में एथलेटिक्स टीम का भाग लेना ।
पाल-नौकायन		20 अप्रैल से 15 जुलाई 1992 तक यूरोपीय सर्किट में पाल-नौकायन टीम का प्रशिक्षण व भागीदारी ।
बैडमिंटन	1-5-92 से 26-5-92 5-6-92 से 28-6-92 7-7-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक्स में प्रस्थान करने तक ।	30 तथा 31 मई, 1992 को बार्सिलोना में अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट) ओलम्पिक टूर्नामेंट प्री-टेस्ट) तथा 2 से 3 जुलाई 92 तक अमस्टरडम में और 4 से 7 जुलाई 1992 पुर्तगाल में अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में बैडमिंटन टीम का भाग लेना ।

1	2	3
		2. 5 से 22 मार्च, 1992 तक बैडमिंटन टीम द्वारा यूरोपीयन सर्किट टूर्नामेंट (स्वीडन, यू०के० और फ्रांस) में भाग लेना।
तीरंदाजी . .	15-2-92 से 8-3-92 1-4-92 से 15-5-92 10-6-92 से 5-7-92 15-7-92 से टीम के बार्सिलोना के लिये प्रस्थान करने तक।	3 से 10 मई 1992 तक अन्तर्राष्ट्रीय तीरंदाजी टूर्नामेंट विजिन में तीरंदाजी टीम द्वारा भाग लेना।
कुश्ती . . .	1-1-92 से 2-2-92 26-2-92 से 5-4-92 14-5-92 से बार्सिलोना के लिये प्रस्थान करने तक।	7 से 10 अप्रैल, 1992 तक कुश्ती टीम का सीनियर एशियाई कुश्ती चैम्पियनशिप, तेहरान में भाग लेना। 18 से 20 जून, 1992 तक कुश्ती टीम ने छठे अन्तर्राष्ट्रीय फ्री-स्टाइल कुश्ती टूर्नामेंट प्योंग यांग (कोरिया) में भाग लेना।
भारोत्तोलन . .	5-5-92 से 12-5-92 22-5-92 से 11-6-92 12-6-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक के लिये रवाना होने तक।	1. फुजोहन, चीन में 9 से 17 अप्रैल, 1992 तक 24वीं सीनियर एशियाई भारोत्तोलन चैम्पियन-शिप में भारोत्तोलन टीम का भाग लेना। 2. 16 से 17 मई, 1992 तक आकलैंड में राष्ट्रमंडल भारो-त्तोलन चैम्पियनशिप में भारो-त्तोलन टीम का भाग लेना।
जूडो . . .	13-5-92 से 5-7-92 6-7-92 से बार्सिलोना ओलम्पिक के लिये प्रस्थान तक।	पूर्व-ओलम्पिक प्रशिक्षण के लिये 12 मई से 8 जुलाई, 1992 तक जापान में 5 जूडो खिलाड़ियों को विदेशी प्रशिक्षण।

श्री शंकर दयाल सिंह : उपसभापति महोदय, यह जो मंत्री महोदय का बयान हमारे सामने है, यह बयान नाम की कोई चीज नहीं है। एक छोटा सा विवरण हम कह सकते है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि 85 करोड़ की आबादी का हमारा यह देश खेल-कूद में इतना दरिद्र साबित हो रहा है कि जब कभी भी ओलम्पिक में या एशियाड में कहीं भी हमारे खिलाड़ी भाग लेने जाते हैं तो एक ओर निराशा और दूसरी ओर लज्जा दोनों के साथ वापिस आना पड़ता है। महोदया, इस बार भी बर्सोलोना में जो पच्चीसवां ओलम्पिक 25 जुलाई से 9 अगस्त तक होने जा रहा है उसमें 12 खेलों में भाग लेने के लिए हमारे खिलाड़ी बाहर भेजे गये हैं। कुल मिलाकर 28 खेलों को ओलम्पिक में मान्यता प्राप्त है लेकिन

हम केवल 12 खेलों में भाग ले रहे हैं। हमारा सरकार से सीधा सवाल यह होता है कि जिन खेलों में हम भाग ले रहे हैं उनमें भाग लेने वालों की तैयारी किस तरह से करवाई गई है, कोचिंग कैसी हुई है और उनके प्रशिक्षण में सरकार ने क्या तैयारी की है। इसका विवरण हमारे सामने आना चाहिए। मैं इसलिए कह रहा हूं कि हाकी को छोड़ कर (व्यवधान)

उपसभापति : छोटा सवाल करिये 20 क्वेश्चन्स होते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री शंकर दयाल सिंह : महोदया, मैं छोटा सवाल ही कर रहा हूं।

श्री दिग्विजय सिंह : 25 जुलाई से ओलम्पिक खेल हो रहे हैं इसलिए बहुत अहम सवाल है (**व्यवधान**)

श्री शंकर दयाल सिंह : देखिए, अब तक के जो ओलम्पिक के रिजल्ट हमारे सामने हैं उनके अनुसार अमरीका ने 1955 पदक हासिल किये हैं, सोवियत संघ ने 1017, जर्मनी ने 883 और हम लोगों ने अब तक 8 स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य, कुल मिला कर 11 पदक हासिल किये हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी तैयारी ठीक से नहीं होती है, चयन ठीक से नहीं होता है, प्रशिक्षण अच्छा नहीं होता है और कोच अच्छे नहीं होते हैं। मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि इस बार जो टीम आपने बाहर भेजी है। उसके प्रशिक्षण में, तैयारी में आपने कितना खर्च किया, कितना समय दिया और किन-किन कोचों ने उन्हें प्रशिक्षण दिया ?

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय महोदया, मैं सम्मानित सदस्य के इस कथन से सहमत हूं कि ओलम्पिक्स में और अंतर्राष्ट्रीय खेलों में जो प्रतिस्पर्धाओं में हमारा स्थान रहा है वह संतोषजनक नहीं है और जब संतोषजनक नहीं है तो फिर वह चिंता का विषय बने, यह स्वाभाविक है। प्रश्न यह है कि केवल चिंता करने से ही तो हल नहीं निकाला जा सकता है। इस विषय में यह भी जरूरी नहीं होना चाहिए कि जितने भी खेल हो रहे हैं उनमें भाग लेना ही एकमात्र हमारा मापदण्ड हो जाए कि हम उसके लिए तैयार हैं। जहां तक तैयारी का प्रश्न है शायद आदरणीय सदस्य ने जो स्टेटमेंट के साथ अनेक्सर है उसको देखा होगा, उसमें बहुत विस्तार से दिया गया है कि किस खेल की किस प्रकार से तैयारी की गयी है। मैं आपसे और सदन से निवेदन करना चाहता हूं कि इस विषय को हम इस दृष्टिकोण से न देखें कि अनिवार्य रूप से हमें कुछ उपलब्ध करना ही है तभी हम पार्टिसिपेट करें। कम कर दिया गया है अबकी दफा खेलों में पार्टिसिपेशन और उसके पीछे यही उद्देश्य है कि जिनमें तैयारी हम पर्याप्त समझते हैं उन्हीं में जाएंगे। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि दुनिया के कई देशों ने इस तैयारी में कमी पाने की वजह से कई वर्षों तक ओलम्पिक में भाग ही नहीं लिया। हम उस जगह तो नहीं जा सकते हैं और न जाना चाहिए। लेकिन तैयारी जहां तक सुभव हो सकी, जो भी खामियां हैं मैं छिपाना भी नहीं चाहता, सबको मालूम है और उन खामियों को दूर करके इस वर्ष ओलम्पिक में इतनी टीमें भेजी गयी हैं। हम सबको यह आशा है कि वे सब अपनी प्रतिस्पर्धा में एक अच्छा स्थान प्राप्त करेंगी।

श्री शंकर दयाल सिंह : मंत्री महोदय जब जवाब दे रहे थे तो उनके ही मंत्री परिषद के एक साथी ने मुझे एक छोटी सी स्लिप भेजी कि खेलों का विभाग मध्य प्रदेश के नेताओं के हाथ में रहा है और वे विजयी होते रहे हैं। मैं इसे प्रसंगिक या अप्रासंगिक किये बिना माननीय मंत्री महोदय ने जो मेरे पहले सप्लीमेंट्री का उत्तर दिया उस क्रम में एक ही बात जानना चाहता हूं कि क्या सरकार को इस बात की जानकारी रही है कि जो चयन की पद्धति हमारी रही है उसमें सरकारी और राजनैतिक दोनों तरह से लोगों ने प्रभाव डालने की बराबर कोशिश की है (**व्यवधान**)

एक माननीय सदस्य : मध्य प्रदेश के लोग खेल खेलने में माहिर हैं।

श्री शंकर दयाल [सिंह : हमारा यह कहना है **(व्यवधान)** इसलिए मैं माननीय मंत्री महोदय को यह कम्प्लीमेंट दे रहा हूं कि यह अच्छी बात है । लेकिन एक सवाल मैं इनसे जानना चाहता हूं । पिछले सिप्रोल ओलम्पिक में जब भारतीय टीम ने भाग लिया था तो उसके इंचार्ज बनकर श्री के.पी. सिंह देव जी गये थे । उन्होंने वहां से वापस आने पर एक रिपोर्ट पेश की थी सरकार के सामने, जिसमें उन्होंने यह इल्जाम लगाया था कि कभी कभी कोच जो हैं या निर्णायक मंडल के लोग जो हैं उन्होंने गलत सस्तुतियां देकर टीम में चयन किए हैं और खास करके नम्बियार का नाम लिया था । पी.टी. ऊषा पिछले सिप्रोल ओलम्पिक में फिट नहीं थीं लेकिन नम्बियार ने बार-बार उनका नाम देकर भेजा । जिससे आप जानते हैं कि पी०टी० ऊषा शायद 30वें या 31वें स्थान पर रहीं । मैं सरकार से यह कहते हुए साफ पूछना चाहता हूं कि हमारा एकमात्र अभी हाकी में है, आप जानते हैं कि 1925 में जब पहली बार . .

उपसभापति : आप पूरी हिस्ट्री न डालें । सवाल इनसे पूछ लें तो मेहरबानी होगी । . . . **(व्यवधान)** ।

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि उस बार जो बारहों टीमों के लोगों के चयन किए गये हैं क्या ये अपनी दक्षता और अपना जो उनका खेलों में एक स्थान है उसके कारण किए गए हैं या कुछ ऐसा भी हुआ है कि सरकारी और राजनैतिक रूप से कुछ दबाव पड़ा है जिसके कारण कुछ . . . **(व्यवधान)**

उपसभापति : मैं बुलाती हूं । उनके नाम पर है सवाल ।

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय उपसभापति महोदया, मुझे तो इस बात की प्रसन्नता हुई कि हमारे किसी मंत्रिमंडल के साथी ने ही आपको यह प्रेरणा दी । आप खुद कहते तो और मजा आता । लेकिन खेल और खिलाड़ी होने से खेल की भावना ज्यादा प्रधान होती है । क्योंकि जब तक स्पोर्टिंग स्प्रिट नहीं होगी तो कोई खेल नहीं खेला जा सकता । जहां तक आपका पहला प्रश्न है कि चयन प्रक्रिया में कहीं से भी ऐसे आधार को समावेश करने का अवसर दिया गया है, जो मूलतः प्रोफेशनल नहीं है, पोलिटिकल है या और कोई कनसिडेरेशन है, मैं विनम्रता से कहूंगा कि हमारा यह प्रयास रहा है कि चयन प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की ऐसी किसी बात का समावेश न किया जाए, जिसका सीधा उससे संबंध न हो ।

यदि कहीं त्रुटि हुई है और माननीय सदस्य बतायेंगे, तो मैं उसे सुधारने के लिए भी तैयार हूं ।

श्री दिग्विजय सिंह : महोदया, मैं मंत्री जी का ध्यान इस ओर खींचना चाहूंगा कि जो आपके पदाधिकारी, सरकारी पदाधिकारी हैं, वे खेल के जो स्वायत्त संगठन हैं, उनके कामों में इस तरह की दखलअंदाजी करते हैं, जिससे उनका चल पाना संभव नहीं है । आपकी बगल में एक मंत्री जी बैठे हुए हैं । उनका खेल संगठनों से संबंध रहा और मैंने भी उनके साथ खेल संगठनों में काम किया है ।

एक संगठन है, नेशनल राइफल एसोसिएशन आफ इंडिया—मैं भी मंत्री था, आपकी बगल में जो मंत्री जी बैठे हुए हैं, वह भी मंत्री थे । हम लोग कोशिश करते रहे थे इस खेल संगठन के लिए—चार साल से एक याचिका आपके विभाग के सामने पड़ी हुई है कि उसे राईफल, पिस्टल और कुछ कारतूस—वह एक ऐसा खेल है जो ओलंपिक में सब से ज्यादा पदक उसके जिम्मे रखा हुआ है और आज भी जो भारतीय ओलिंपिक टीम जा रही है, उसमें एक सदस्य सोमा दत्ता है । वह सब से बड़ी उम्मीद की निशानी बन कर आज कि बार बार्सीलोना में जा रही है ।

मैं आपसे जानना चाहता हूं कि क्या ऐसे पदाधिकारियों पर कोई जिम्मेदारी आप धरेंगे या लेंगे, जिससे यह पता

चल सके कि खेल स्वायत्त संगठनों से उनका रिश्ता कैसा होगा ?

एक सब से दुखद बात इस सिलसिले में मैं यह कहना चाहूंगा कि जब-जब सचिवों का चुनाव करते हैं खेल विभाग का, तब-तब वैसे व्यक्तियों का करते हैं जो चार महीने से ज्यादा उस विभाग में टिकने वाले नहीं होते । इसलिये खेल के बारे में अगर आप सचमुच गंभीर हैं, सचमुच आप चाहते हैं कि ओलम्पिक जैसे संगठन में भारत का नाम प्रतिष्ठा से जुड़े तो आपको गंभीरता से विचार करना होगा । खेल के बारे में एक सही दिशा तय करते हुए ऐसे सचिवों को नियुक्ति करें, जो लंबे समय तक वहां टिकें ।

दूसरी बात मैं आपसे यह अर्ज करना चाहूंगा कि आप अपने विभाग को यह आदेश दें कि कम से कम इन छोटी बातों पर यह खेल विभाग के जो लोग हैं, वह स्वायत्त खेल संगठनों के साथ बदतमीजी से सुलूक न करें ।

श्री अर्जुन सिंह: आदरणीय उपसभापति जी, मैं माननीय सदस्य के मंत्रित्व काल के अनुभव से अपरिचित हूं ।

श्री दिग्विजय सिंह : बगल वाले मंत्री . . . **(व्यवधान)**

श्री अर्जुन सिंह : सुन लीजिए । . . . **(व्यवधान)** अगर उनका अनुभव यह है—यह उनका अनुभव हो सकता है, पर मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हू कि किसी भी खेल संगठन के संबंध में किसी भी निर्णय के बारे में, किसी मंत्री महोदय ने मुझसे आज क कोई बात नहीं की है और यदि कोई सुझाव कोई मंत्री या सदस्य देगा, वह अलग बात है । लेकिन चयन प्रक्रिया में, किसी फैडरेशन के कामकाज में हस्तक्षेप करने का किसी ने कोई ऐसा हस्तक्षेप किया नहीं है और मैं हस्तक्षेप बर्दाश्त भी नहीं करूंगा ।

श्री दिग्विजय सिंह : मैं जो आपसे यह गुजारिश कर रहा था कि जो चार साल से एप्लिकेशन पड़ी हुई है—उनको इम्पोर्ट करने के लिए अपने हथियारों के बारे में, अपने खेल उपकरणों के बारे में, उस पर आपके खेल विभाग ने क्या फैसला किया है ?

श्री अर्जुन सिंह : मैं उसको देख कर आपको बता सकता हू ।

SHRI N. K. P. SALVE: I earnestly appreciate the spirit of the Minister in sayng that more than sports sportsmanship is important. I have myself been associated with the sports organisation and whenever we could not win the gold, i always used to say 'what is important is sportsmanship. Sportsmanship is no substitute to excellence. What is needed is excellence and it is really a matter of very great shame for us that this country with 850 million people is not able to produce gold winners. Be that as it may, he cannot, in one year's time, produce gold winners. I know that. But what he certainly can do is this. It is a suggestion from me. Invariably a large retinue of Government bureaucrats and officials get themselves tagged on to the team visiting Olympics. May I know from the Minister, how many non-participant Government officials are likely to accompany the Olympic athletic team to Barcelona will be promise to this House will be given an assurance to this House that he will look into that list and keep it to barest minium?

SHRI ARJUN SINGH: Madam, my concern is we should not allow a large contigent of officials. Regarding the number of officials going to Barcelona, I can forward the list to the hon. Member.

SHRI DIPEN GHOSH: Forward it to the Parliament.

SHRI ARJUN SINGH. Of course, through him, to the Parliament. So far as the pursuit of excellence is concerned, I am not putting across sporting spirit as an alibi. But. I have told the House a little while go that this pursuit of excellence has to go

through a certain rigorous way. If cannot be produced simply because I or you wish it to be. Now that road will have to be followed and that road cannot be a short-term road of one or two years. There are certain initiatives which have been set in motion. One is scouting talent. Scouting talent in such a big country is not a very easy thing. You must have people. You must have areas. You must have the methodology to scout talent and in such a big country that itself is a very major and a very important task. That process in the last couple of years has yielded some good results and one of them is discovery of Limba Ramji, an Adi-vasi from an obscure village in Rajasthan. He is now our hope in Archery. From that time to this time, where he is now going to represent the country, we are pinning our hopes on him. It is a long road and it is a difficult road and it requires not only effort but also resources. I am confident that with the attention and with the importance that is attached by us, by the Prime Minister and by the hon. Members of Parliament also, the question of India taking its rightful place in" the arena of sports will not be a distant dream.

THE DEPUTY CHAIRMAN: With this assurance, we will move to Q No. 144.

श्री अनन्त राम जायसवाल : मैडम ...(**व्यवधान**)

उपसभापति : जायसवाल जी, अभी यह सब जवाब दे दिए है ।

अनन्त राम जायसवाल : बड़ा इंपार्टेंट है, मैडम । ओलंपिक खेलें चार साल में एक बार होती है । कुछ सवाल तो पूछ लेने दिया जाए ।... (**व्यवधान**)

श्री सिकन्दर बख्त : मेरा नाम नहीं बताया ?

उपसभापति : मेरा नाम बहुत है पच्चीस । जितनी बड़ी टीम नहीं जा रही है उतने सवालात हैं कहीं तो अंकुश लगाना पड़ेगा ।...(**व्यवधान**) जायसवाल जी, बिल्कुल एक छोटा सा सवाल ।

श्री अनन्त राम जायसवाल : जी, छोटा सा सवाल । क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि ओलंपिक खेलों में हमारे खिलाड़ियों के इतने खराब और शर्मनाक प्रदर्शन के क्या कारण हैं ? क्या आपकी जानकारी में वे कारण आए हैं ? और इस दफा जो तैयारी आप करा रहे है तो उन कारणों को अलग-अलग दूर करने के लिए आपने क्या प्रयास किए हैं ?

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय महोदया, मैं आपकी अनुमति से कहना चाहता हूं कि अपने देश का प्रतिनिधि करने वाले खिलाड़ियों के लिए "शर्मनाक" वर्ड उनके साथ लगाना शायद बहुत अच्छा नहीं होगा । हो सकता है वह सफल हुए हों या न हुए हों ।

श्री अनन्त राम जायसवाल : पूरे देश के लिए शर्मनाक, गौरवपूर्ण मंत्री जी के लिए ।

श्री अर्जुन सिंह : नहीं-नहीं, गौरवपूर्ण आपके लिए है न मेरे लिए है, लेकिन जो हमारे देश से कभी भी गए होंगे या आगे जायेंगे उनको आप ही कंडेम करेंगे तो फिर क्या होगा उनको सुधारना चाहिए जो गलतियां हुई हैं उनको हटाना चाहिए और प्रयास करना चाहिए, लेकिन उनका कंडेम करने से तो कोई फायदा नहीं है ।

उपसभापति : प्रोत्साहन देना चाहिए। ...(**व्यवधान**)

श्री अनन्त राम जायसवाल : पूरा जवाब नहीं आया ।

श्री अर्जुन सिंह : मैं जवाब दे रहा हूं ।

उपसभापति : जवाब दे रहे हैं ।

श्री अर्जुन सिंह : मैं जवाब दे रहा हूं । जहां तक उन प्रश्नों का सवाल है जिनको आइडेंटीफाई किया जा चुका है, जिनकी वजह से हमारी कमियां सामने उजागर हुई हैं उनको दूर करने का प्रयास किया गया है और उसी प्रयास के आधार पर मैं कह रहा हूं कि हमें आशा है कि अबकि दफा की टीम शायद बेहतर पहले से अपना रंग दिखायेगी ।

Production of pulses and oilseeds

*144 SHRI KRISHAN LAL SHARMA : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether it is a facgt that pulses and oilseeds are the main source of protein and fat for the masses of the country;

(b) whether it is also a fact that their cultivation, production and consumption are on decline;

(c)if so, the reasons therefor; and

(d) the steps being contemplated to improve their production and con sumption?

THE MINISTER OF AGRICULTURE (SHRI BALRAM JAKHAR): (a) to (d) A Statement is laid on the Tsble of the Sabha.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) Area, production and availability of oilseeds and pulses for the year 1985-86 and 1990-91 are given below:—

	Oilseeds/Edible oil	
	1985-86	1990-92
Area (million hectares	19.02	24 31
Domestic production of oilseeds (million tonnes)	10.83	18.45
Edible oil availability (including availability through imports)—kgs. per capita per annum	5.0	5.40

	PULSES	
	1985-86	1990-91
Area (million hectare.)	24.42	24 40
Domestic production of pulses (million tonnes)	13 36	14.06
Availability (including availability through imports) grams per capita per day.	38.40*	41.40*

Between the above years, production of oilseeds increased impressively by 70 per cent though the area under cultivation increased by only 26 per per cent. Per capita availability of edible oil also increased significantly. Production of pulses reached a record figure in 1990-81. Per capita availability of pulses improved in 1990 compared to 1985. However, current per capita availability is much lower than the peak availability of 74.9 grams per capita per day reached in 1959.

(c) The major reasons for declining availability of pulses are:—

(i) Production has not kept pace with the increase in population.

(ii) About 92 per cent of the pulses area is rainfed, where production continues to be very low.

(iii) Lack of genetic breakthrough in pulse varieties as compared to cereals.

(d) To improve the production of oilseeds, a Centrally Sponsored Oilseeds Production Programme (OPP) is under implementation in 21 States . Another Centrally Sponsored Scheme, the National Pukes Development Programme (NPDP) is being implemented in 24 States and two Union Territories. Under these pro-

*Relate to calendar years 1985 and 1990.